मेहनतकशों का पैग़ाम — मेहनतकशों के नाम

# मज़दूर मोर्चा

पाक्षिक

Email : mazdoormorcha@yahoo.co.in
www.mazdoormorcha.com

Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06 /R.N.I. No. 66400/97

थाना एन आई टी बना समझौते की दुकान — 3
मोदी की पाठशाला
अच्छे दिनों की शुरूआत बैंकों के निजीकरण की तैयारी — 5
प्रतिक्रियावाद की आंधी — 5
तिरस्कार झेलने को अभिशप्त नारी
भ्रष्टाचारी सरकार एवं निकम्मे प्रशासन का परिणाम — 8
नालायक प्रशासन का बस्ता भारी

वर्ष 27 अंक 22 फरीदाबाद, बुधवार, 1-15 अक्टूबर 2014 फोन : - 9999595632 2 ₹

# चुनाव लीला की रामलीला रावण सभी, राम कौन ?

**शायद ही किसी ने कल्पना की हो कि चौटाला और भाजपा, भूपेन्द्र हुड्डा के लिये संजीवनी सिद्ध होंगे। चौटाला के चरित्र से तो हरियाणवी वाकिफ़ थे ही, भाजपाईयों के चरित्र पर से भी पर्दा कुछ ज़्यादा ही तेज़ी से उठता गया है। इसमें विशेष मदद मिली है चौटाला की जेल कायम रहने से और मोदी की केन्द्र में भाजपाई सरकार द्वारा कार्पोरेटों के पक्ष में नंगा हो जाने से। मोदी की कैथल रैली में हुड्डा का अपमान और चौटाला की हरियाणा गुरुद्वारों की लूट को हड़पने वाले बादल परिवार से दोस्ती भी हुड्डा के लिये लाभकारी सिद्ध होने जा रहे हैं**

**मज़दूर मोर्चा, फरीदाबाद ब्यूरो**

इत्तफ़ाक ही है कि हरियाणा मे इस बार रामलीला के साथ-साथ चुनावलीला भी देखने को मिल रही है। फ़र्क केवल इतना है कि रामलीला पौराणिक अवधारणा पर आधारित है जो व्यक्ति का निजी मामला है; जबकि चुनावलीला वर्तमान की कटु सच्चाई है। यह किसी के विश्वास की

मोहताज नहीं। इसका प्रभाव राज्य एवं समाज के प्रत्येक व्यक्ति पर पड़ना लाजमी है। इसके नतीजों से राज्य के एक छोटे से गिरोह को लूट व शोषण का अधिकार मिलेगा तो आम जनता लुटने-पिटने को विवश होगी। विडम्बना यह है कि अधिकांश जनता इस बात को समझती भी है, लेकिन विकल्पहीनता की स्थिति इतनी भयंकर है कि उसके पास इस या उस दल के हाथों अपना भाग्य सौंपने के अतिरिक्त और कोई विकल्प नहीं बचता।

चुनावलीला के मंच पर मौजूद कलाकार मुख्य रूप से तीन दलों-कांग्रेस, भाजपा व चौटाला पार्टी के झंडे उठाए हुए हैं। प्रत्येक कलाकार अपनी पार्टी का यशोगान करता है तो दूसरी पार्टियों को भ्रष्ट, निकम्मा, चोर व लुटेरा बताता है; जबकि हैं तीनों एक जैसी। यहां तक कि ज्यों ही किसी को पार्टी टिकट देने से इन्कार कर देती है तो वह दूसरी पार्टी में जाकर उसके गीत गाने लगता है साथ ही अपनी पुरानी पार्टी को कोसने व गालियां बकने लगता है। राज्य भर में ऐसे नमूने कोई एक-आध नहीं बड़ी संख्या में मौजूद हैं। ऐसे कुछ नमूने इस शहर में भी हैं।

फ़रीदाबाद (ओल्ड) से भाजपा के

**नज़र आती नहीं बूंदे किसी भी एक बादल में**
**किये हैं आचमन सारे ही जैसे विष भरे जल में**
**अगर हम गौर से देखे हक़ीकत सिर्फ़ है इतनी**
**चुनावी राम लीला में तो रावण है हर एक दल में**
**- दिनेश रघुवंशी**

बीसियों-तीसियों वर्ष पुराने नेता प्रवेश मेहता जो हर सांस में भाजपा का जाप करते थे, उस वक्त यकायक पलटी मार गये जब विपुल गोयल को पार्टी ने अपना उम्मीदवार घोषित कर दिया। इसकी संभावना 'मज़दूर मोर्चा' के 1-15 सितम्बर अंक में व्यक्त कर दी गयी थी। कल तक जिस पार्टी का जाप करते थे यकायक उस पार्टी को भ्रष्टाचारियों का अड्डा बताते हुए चौटाला पार्टी के टिकट पर खम्ब ठोंक कर विपुल के सामने खड़े हो गये। इसमें कोई दो राय नहीं कि चुनाव लड़ने के पीछे इन दोनों का उद्देश्य एक ही है-लूट में अपनी पार्टी का सहयोग देना व अपने हिस्से की दलाली खाना। लेकिन यहां प्रवेश के तर्क में दम है कि जब वे बीसियों-तीसियों बरस से पार्टी की 'सेवा' के लिये लाइन में लगे हुए हैं तो लाइन तोड़ कर, कल के आये विपुल को यह मौका कैसे दिया जा सकता है ? जाहिर है इसमें प्रवेश का यह कहना तो बनता ही है कि 'तू नहीं तो और सही, यहां नहीं तो और कहीं।'

प्रवेश चौटाला पार्टी में चले तो गये हैं, परन्तु वहां टिक पाना कोई आसान काम नहीं। इस बात की तसदीक उन्हें मूल चन्द शर्मा से कर लेनी चाहिये थी जो करीब दस बरस उस पार्टी का स्वाद खूब अच्छी तरह से चख चुके हैं। वहां लूट के माल पर एकाधिकार तो केवल चौटाला परिवार का ही रहता है, बाकी सब तो बची हुई जूठन को ही तरसते रहते है।

जो भी हो, भाजपा ने विपुल को टिकट देकर अपनी एक सीट तो खो ही दी है। अब मुकाबला होगा प्रवेश मेहता और आनंद कौशिक के बीच। यद्यपि 5 बरसों में आनंद कौशक ने सड़कों पर नारियल फ़ोड़ने व ठेकेदारों तथा अधिकारियों से वसूली करने के अलावा और कोई काम नहीं किया। सरकारी कर्मचारियों-अधिकारियों के तबादले कराने का धंधा भी उनका ठीक-ठाक ही चला। भाई की ठेकेदारी तो अलग से चलती ही रही। इसके अलावा भर्तियों व सी एल यू आदि का कोटा तो मुख्यमंत्री हुड्डा साहबा सबको अपने हिसाब से देते ही रहे हैं।

**शेष पेज दो पर**

ख़बर दार

# जनता करती गंदा, मोदी करता साफ़ !

**भ्रष्टाचार** की लड़ाई 'फ़तह' करने के बाद अब कार्पोरेट के ट्रोज़न हार्स भाजपाई प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने उसी अंदाज़ में देश के 4000 से अधिक नगरों/कस्बों में गंदगी खत्म करने का बिगुल बजा दिया है। इसके नाम पर केन्द्र सरकार ने दो लाख करोड़ रुपये का प्रावधान भी कर दिया है। सफ़ाई हो या न हो पर जनता के खून-पसीने की यह रकम जरूर साफ़ कर दी जायेगी।

लोकसभा चुनाव में जीत हासिल करते ही मोदी ने बनारस की धन्यवाद सभा में आम जनता को सफ़ाई का पाठ पढाना शुरू कर दिया था। उनका निचोड़ था कि जनता ही गंदगी फ़ैलाती है। बंद करने का जिम्मा उठाने के लिये अब मोदी आ गया है। कुछ दिनों पहले मोदी ने गरजती घोषणा भी कर दी थी-न गंदगी करूंगा और न ही करने दूंगा।

2 अक्टूबर गांधी जन्मदिन से शुरू होने वाले इस महा-अभियान का नेतृत्व स्वयं मोदी झाड़ू उठा कर करेंगे। जाहिर है इसके कई राजनीतिक मतलब भी है। एक तो हत्यारे नाथूराम गोडसे के बजाय शान्तिदूत गांधी से जुड़ने की पैंतरेबाजी की जा सकती हैं। यह मोदी की गुजरात नरसंहार वाली संघी छवि को राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकार्यता दिलाने की कवायद का हिस्सा है। दूसरे हाथ में झाड़ू पकड़ने से केजरीवाल की झाड़ू की तीलियों को भी बिखेरा जा सकता है।

कहने वाले तो यह भी कह रहे हैं कि मोदी ने अपनी पार्टी व मन्त्रिमंडल के सहयोगियों पर तो झाड़ू फ़ेर ही रखी है। अब धीरे-धीरे यह दायरा बढता जायेगा। इसमें श्रमिक, कामगार, किसान और आम आदमी को भी लपेटा जायेगा। भ्रष्टाचार विरोधी 'अभियान' का निशाना भी अन्ततः आम कर्मचारी को ही बनाया जा रहा है।

यह जानना मुश्किल नहीं है कि मोदी के महा सफ़ाई अभियान में होगा क्या? 2 अक्टूबर के दिखावे में झाड़ू पकड़ कर फ़ोटो खिंचाई जायेगी और मीडिया द्वारा मोदी का गुणगान किया जायेगा। इसी के साथ कचरा संवर्धन संयन्त्रों के नाम पर देशी-विदेशी कार्पोरेटों को बड़े-बड़े ठेके दिये जायेंगे, जिनमें राजनीतिकों और नौकरशाहों की हिस्सेदारी बदस्तूर रहेगी। अन्ततः साफ़-सफ़ाई का सारा दारोमदार गंदगी में जीने को विवश सफ़ाई कर्मचारियों के सिर पर ही पड़ेगा। उन्हें कामचोर बताने की पुरानी प्रथा है। इसी परंपरा को बढाते हुए शहरी मध्य वर्ग को उन पर निगरानी रखने के लिये उकसाया जायेगा।

यहीं से मूल मुद्दा निकलता है। सफ़ाई कर्मचारियों को स्वच्छ एवं स्वस्थ जीवन की सुविधायें उपलब्ध कराये बिना क्या नगरों व कस्बों में छेड़ा गया सफ़ाई अभियान सफ़ल हो सकता है ? जिन्हें सरकार व समाज गंदगी में रखते आये हैं, क्या उन्हें गंदगी उसी प्रकार नज़र आ सकती है जैसे सफ़ाई में रहने के आदी हो चुके नरेन्द्र मोदी को नज़र आती है ? मोदी को अपना 'चायवाला' समय याद करना चाहिये जब उन्हें भी रेलवे प्लेटफ़ार्म पर चारों ओर बिखरी गंदगी नज़र नहीं आती थी।

इस देश का एक आम सफ़ाई कर्मचारी जो दरबेनुमा बसेरों में रहता है। ज़्यादातर शहर के गंदे नालों के किनारे बसी अनाधिकृत बस्तियों में रहते हैं जहां चारों तरफ़ गंदगी के ढेर सड़ रहे होते हैं। न साफ़ पानी और न शौचालय इत्यादि। सड़क और बिजली बस नाम-मात्र को। स्कूल और अस्पताल का तो मतलब ही नहीं। यदि सफ़ाईवाला किस्मत से सरकारी कर्मचारी हुआ तो भी उसे सबसे घटिया सुविधायें ही मयस्सर होती हैं। ऐसे में, बिना उनका जीवन स्तर उठाये मोदी द्वारा छेड़ा गया सफ़ाई अभियान विफ़ल ही होना है। बस कुछ वर्ष तक आंकड़ों के ढोल जरूर पीटे जायेंगे ताकि 2 लाख करोड़ हजम करने में दिक्कत न हो।

# भाजपा तथा चौटाला ने हुड्डा को ज़िंदा किया

**मज़दूर मोर्चा, दिल्ली ब्यूरो**

कांग्रेस की केन्द्रीय व हरियाणा सरकार द्वारा गत 10 वर्षों में किये गये घोटालों व लूट-मार से त्रस्त जनता ने मई माह में केन्द्र सरकार का तो तख्ता पलट दिया और हरियाणा में पलटने को आतुर थी। लोकसभा चुनाव के बाद हरियाणा की जनता बड़ी ही बेसब्री से विधानसभा चुनाव की बाट जोह रही थी ताकि मुख्यमंत्री भूपेन्द्र को चारों खाने चित्त कर सके। उस वक्त के हालात में लग रहा था कि राज्य में कांग्रेस 15 से अधिक सीटें नहीं निकाल पायेगी।

लेकिन आज स्थिति बहुत बदल चुकी है और दिन ब दिन बदलती जा रही है। भाजपा ने जिस धोखेबाज़ी एवं लिफ़ाफ़ेबाज़ी से जनता को बरगलाया था, अच्छे दिनों के हसीन सपने दिखाये थे, वे सब चूर-चूर हो चुके हैं। आज जनता अपने आपको भाजपा के हाथों ठगा सा महसूस कर रही है। भाजपा और कांग्रेस की नीतियों में जनता को कोई फ़र्क महसूस नहीं हो रहा। भाजपा सरकार भी कांग्रेस की नीतियों को आगे बढा कर उनके अधूरे छोड़े कामों को पूरा कर रही है।

जिस साम्प्रदायिक ध्रुविकरण एवं ग्लैमराइज्ड प्रचारतंत्र के आधार पर भाजपा ने लोकसभा चुनाव में अप्रत्याशित जीत हासिल कर ली थी, उसी तिकड़म से वह उपचुनावों में भी भारी विजय की आशा पाले बैठी थी। लेकिन बिहार, उत्तराखंड, यूपी, राजस्थान व कर्नाटक आदि राज्यों में मिली हार से जहां भाजपा की सिट्टी-पिट्टी गुम है वहीं वेंटिलेटर पर पड़ी कांग्रेस में जीवन लौटने लगा।

हरियाणा में जिस तरह से बड़े पैमाने पर भाजपा ने कांग्रेसियों को अपने गिरोह में शामिल किया है, उससे उसका सांगठनिक दिवालियापन तो साबित हुआ ही, साथ में बरसों से कुछ माल-पानी मिलने की आस लगाये बैठे 'कार्यकर्ता', बड़े नेता बनने की तैयारी में छुटभैये नेता, एकदम उखाड़-पछाड़ पर उतारू हो गये। हों भी क्यों न, खेत संवार कर फ़सल बोय कोई और काटने के वक्त आ धमके कोई, यह भला कैसे बर्दाश्त हो सकता था।

दूसरी ओर कांग्रेस ने यह कहकर राहत की सांस ली कि चलो उनके यहां का कुछ गंद तो निकला। बिरेन्द्र जैसे चले हुए कारतूस जिनके नाम बड़े और दर्शन छोटे, को अपने में समाहित करके एक समय गदगद होनेवाली भाजपा को अब समझ आने लगा है कि उनकी हैसियत क्या है।

जिस प्रदेशाध्यक्ष रामबिलास शर्मा के नेतृत्व में भाजपा चुनाव समर में उतरी है, उसकी अपनी हैसियत ही दो कौड़ी की नहीं। मुख्यमंत्री बनने का ख्वाब संजोय बैठे राम विलास के बारे में जिससे पूछो यही कहता है कि इसका तो विधायक बनना ही मुश्किल है। क्या विडम्बना है जिस प्रदेशाध्यक्ष के ज़िम्मे पूरी पार्टी को जीत की ओर लेकर चलने का दायित्व हो और उसके खुद के जीतने के लाले पड़े हों, जिसकी अपनी पार्टी के लोग उस पर टिकटें बेचने के आरोप लगा रहे हों, राज्य भर में उसके पुतले फूंक रहे हों तो उस पार्टी का चुनाव में क्या हश्र होने वाला है, समझना कोई बहुत कठिन नहीं। इन हालात के चलते पहली बार अपने बूते चुनाव लड़ने जा रही पार्टी यदि तीसरे नम्बर पर आ जाये तो कोई ताज्जुब नहीं होना चाहिये। इतिहास गवाह है कि गठबंधनों की बैसाखियों पर चलकर भी इसने कभी 10 से अधिक सीटें नहीं पाईं।

आजकल जातिवाद और परिवारवाद की राजनीति तो लगभग सभी करने लगे हैं, परन्तु विशुद्ध जातिवाद एवं परिवारवाद की राजनीति करने वाले चौटाला द्वारा वर्ष 1998 से 2004 तक (6 वर्ष) के कुशासन का स्वाद जनता को इतना कड़वा लगा कि 2004 के चुनाव में चौटाला को मत्र 9 सीट मिली थी। और इससे कुछ माह पूर्व हुए लोकसभा चुनाव में चौटाला पार्टी को 10 में से एक भी नहीं मिली थी। चौटाला के प्रति यह जनता का गुस्सा ही था जो उसने अपने मताधिकार के द्वारा प्रगट किया था।

लेकिन जनता के दुर्भाग्य से जनता ने जिस कांग्रेस को सत्ता सौंपी उसने भी लूट-मार, प्रशासनिक अक्रमण्यता व भ्रष्टाचार के सिवा जनता को कुछ नहीं दिया। इससे दुखी जनता ने 2009 के चुनाव में कांग्रेस को स्पष्ट बहुमत से 5 सीटें कम दी। उधर हाशिये पर जा चुकी चौटाला पार्टी पुनर्जीवित हो उठी थी। उसने अकेले अपने बूते 32 सीटें हासिल की थी। लेकिन सत्ता के बल पर हुड्डा ने जोड़-तोड़ कर अपनी सरकार फ़िर से बना ली। सरकार तो जैसे-तैसे बना ली लेकिन जनता की इस चेतावनी को मुख्यमंत्री हुड्डा ने समझने की जरूरत नहीं समझी और सरकार की कार्यशैली ज्यों की त्यों चलती रही। इसके चलते चौटाला पार्टी फ़िर से जोश में है।

लेकिन चौटाला पार्टी के मुसीबतें भी कम नहीं। अपने कुशासन के बल पर उन्होंने 3000 से अधिक जो मास्टर भर्ती किये थे, उसे कोर्ट ने ग़ैरकानूनी बता कर पूर्व मुख्यमंत्री चौटाला व उनके बड़े बेटे अजय सहित 54 लोगों को जेल भेज दिया। चौटाला व उनके पुत्र आदि को 10-10 साल की सज़ा दे दी। इसके चलते पिता-पुत्र अब चुनाव नहीं लड़ सकते। इसके चलते उनके छोटे पुत्र अभय की तो मानो लॉटरी ही निकल आई। अब वह मुख्यमंत्री बनने के ख्वाब देखने लगे हैं जबकि चौटाला कभी नहीं चाहते कि वह मुख्यमंत्री बने।

**शेष पेज दो पर**